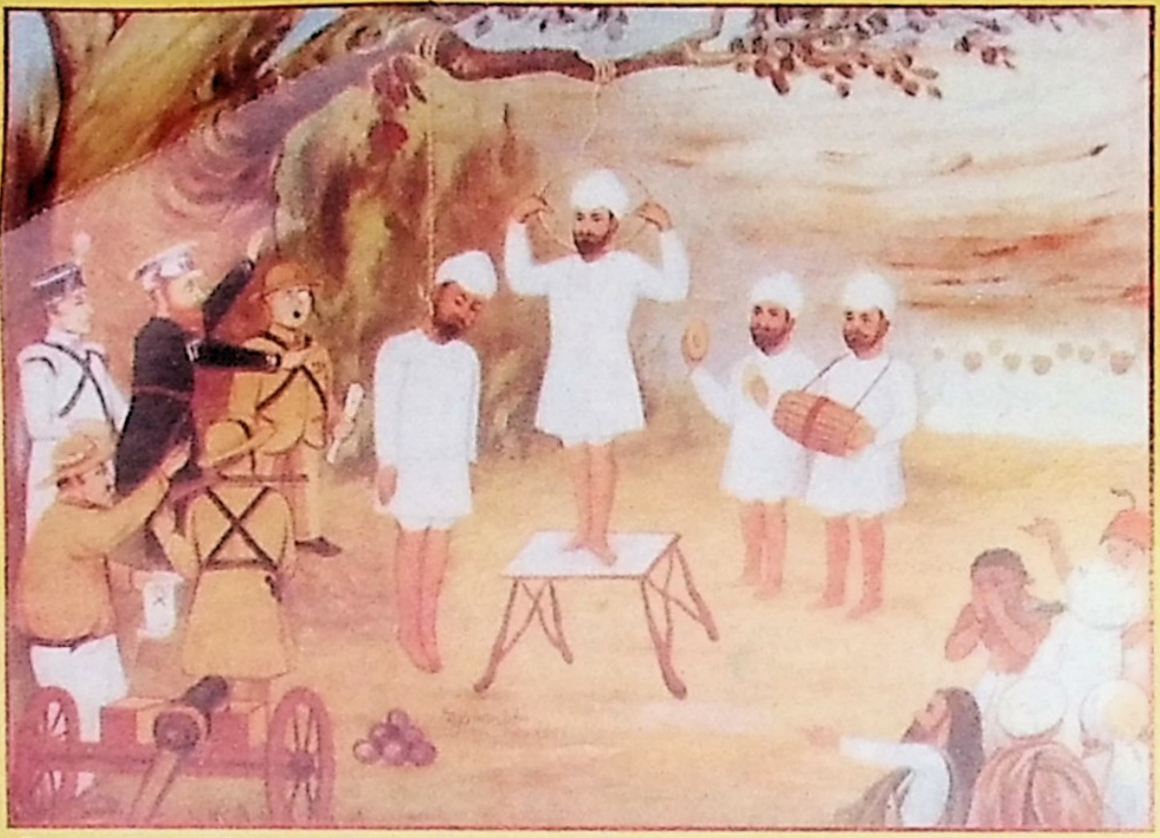
नामधारी
सिख गुरु मर्यादा
परम्परा और गौरव



स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणि
श्री सतिगुरु राम सिंह जी महाराज।

नामधारी दरबार
श्री भैणी साहिब–141126
पंजाब।



गो-रक्षा और हरिमन्दिर साहिब अमृतसर की पवित्रता के लिए बलिदान होते हुए नामधारी सिक्ख।



मलेरकोटला में शहीद वरयाम सिंह तोप के समक्ष शहीदी के लिए तत्पर।

नामधारी
सिख गुरु मर्यादा
परम्परा और गौरव

सिख धर्म चिंतन की परम्परा में गुरु अर्थात सतिगुरु की भूमिका का अद्वितीय महत्व है। इसी लिये सिख विचार दर्शन को गुरमति या गुरमति दर्शन की संज्ञा दी गयी है। गुरु पद के महत्व को सिख मूल मंत्र में अंकित गुर प्रसादी की परिभाषिक शब्दावली द्वारा भली भांति समझा जा सकता है। अर्थात् जो कुछ भी सिख अथवा गुरु के अनुयाई को प्राप्त होना है, वह गुरु की कृपा और नदर कर्म द्वारा ही मिलता है। 'जपुजी 'साहब' में भी-*'जिन कउ नदरि करम तिन कार'* इसी गुर प्रसादी या सतिगुर प्रसादि के मुख्य पदों के महत्व को मूर्तिमान करते हैं जिसका केवल एक सार तत्व है कि गुरमति में समूचे जीवन दर्शन का आधार भूत केन्द्र बिन्दू, गुरु और केवल गुरु ही है। गुरु की कृपा के बगैर न तो अध्यात्मिक ज्ञान सम्भव है, न ही भक्ति और मुक्ति प्राप्त हो सकती है। प्रो० पूर्ण सिंह जैसा प्रमुख गुरमति आचार्य सिख चिंतन के संबंध में इसी बात पर बल देता हुआ उल्लेख करता है–

"गुरु ही निर्गुण को सतिगुरु स्वरूप में प्रकट करता है। गुरु के रूप में प्रमात्मा स्वयं ही अवतार लेता है। गुरु के रूप में वह मनुष्य बनकर हमारे बीच आता है और हमारे भीतर जीवन की नई ज्योति जगाता है। यह ब्रह्म ज्ञान – *'एका ब्रह्म दुतिया नेसती'* अर्थात् सभी ब्रह्म ही है। गुरु के निजी स्वरूप के मिलाप के बगैर सब तुच्छ और अनावश्यक है। योग विशिष्ट का रचियता और भाई गुरदास इस बात की घोषणा करते हैं कि निजी स्वरूप में गुरु के मिलाप के अलावा कहीं से भी प्रमात्मा के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती।"

आप श्री ग्रन्थ साहब में से गुरुवाणी के प्रमाण देते हुये लिखते हैं–

"गुरु मेरी माता है। गुरु मेरा पिता है। गुरु मेरा स्वामी है। गुरु ही

मेरा सर्वोच्च प्रमेश्वर है। गुरु मेरा मित्र है। अज्ञान का अंधेरा दूर करने वाला है। गुरु परम सुंदर है। गुरु मेरा सगा सहोदर है। गुरु परम उदार है। मेरे भीतर नाम की प्रेरणा उत्पन्न करने वाला है। गुरु मेरी प्रेरणाशील चेतना को स्थिर रखने वाला है। गुरु वह वारिस है जिसके स्पर्श मात्र से मुझे मुक्ति प्राप्त हो सकती है।"

भट्टों के सवईयों में गुरु साहिबान के यश गायकों भट्ट कवियों ने गुरु के निजी स्वरूप की महिमा को लगभग सभी सवईयों में बखान किया है। और इस बात की ओर भी संकेत किया है कि गुरु का अस्तित्व आदि जुगादी है और उसकी ज्योति हर युग में सदैव प्रकाशमान रहती है। भट्ट कवि इस विचार की पुष्टि इन शब्दों द्वारा करते हैं—

"सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइयो॥
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ॥
दुआपुरि कृष्ण मुरारि कंस किरतारथु कीओ॥
उग्रसैन कउ राजु अभै भगतह जन दीओ॥
कलयुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगद अमरू कहाइओ।
श्री गुरु राजु अबिचल अटल आदि पुरखि फुरमाइओ॥"

गुरुवाणी का उपरोक्त उदाहरण इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि अकाल पुरख या निर्गुण पार ब्रह्म की अनादि और आदि जुगादी सत्ता अखंड और निरंतर रूप में युग युग में सदा अवतारों, गुरुओं और भक्तों के स्वरूप में विद्यमान रहती है। और यह गुरु आत्मा युग युगांतर की भाईवाली में बंधी हुई है। इसीलिये सतियुग में बावन अवतार, तृेता युग में राम अवतार, द्वापर युग में कृष्ण अवतार के समान' की कलियुग में भट्ट कवि गुरु नानक और उनके पश्चात आये उनके उत्तराधिकारी गुरु साहिबान के रूप में गुरुवंश के सदैव प्रकाश के संबंध में किया गया यह कथन— *"श्री गुरु राजु अबिचलु अटलु"* स्थाई महत्व रखता है। भाई गुरदास भी अपनी 10वीं वार में युग युगांतर की इसी सांझ को बखान करते हैं कि गुरु ज्योति निहचल और अखंड सत्ता वाली है। गुरु नानक साहब जी ने इसी गुरु ज्योति की निरंतरता के रहस्य को अलग सा स्वरुप दे दिया और गुरु घर के यश गायक कवियों सत्ता और बलवंड द्वारा **'जोत उहा जुगति साइ सह काया फेर पलटिए'** के प्रमाण द्वारा इस आद्वित्तीय रहस्य को साक्षात रूप में अनुभव किया और इसे व्यक्त किया।

सामाजिक और मानवीय स्वरूप में भी श्री गुरु नानक देव जी ने

जिस प्रकार गुरु सरगुण स्वरूप में इस निरंजनी ज्योति को अपने उत्तराधिकारी गुरु साहिबान में स्थापित कर दिया, यह भी अध्यामिक इतिहास का एक अलग तरह का महत्व पूर्ण चमत्कार था। जिसने धार्मिक और सामाजिक इतिहास की संस्कृति को एक नई आत्मिक शक्ति के रूप में मानव समाज में प्रवाहित कर दिया और जिसने संसार के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास में नई शक्ति का प्रादुर्भाव किया, जिसके फलस्वरूप मानव समाज में नई क्रांतिकारी चेतना और धर्म परायता, गुरु प्रति समर्पण की उस भावना को उत्पन्न कर दिया, जिसने मानवी समाज का समष्टीगत और व्यक्तिगत तौर पर केवल काया कल्प ही नहीं किया बल्कि मनुष्य के सामाजिक इतिहास के नये पृष्ठ अध्याय जोड़ दिये जिनके द्वारा आत्मिक सामानता की सच्ची बादशाहत कायम की जा सकती है। सचखंड में इस आध्यात्मिक बादशाह का संचालक और महा नायक अकाल पुरख स्वयं है। वह मात लोक में इसका साकार स्वरूप सतिगुरु और उसकी सिरजी निवाजी 'साध संगत' द्वारा देखा परखा जा सकता है। 'जपुजी' में श्री गुरु नानक जी का फरमान है—

मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी॥
गुरा इकु देहि बुझाई॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई॥
पंच परवाण पंच परधानु॥
पंचे पावहि दरगहि मानु॥
पंचे सोहहि दरि राजानु॥
पंचा का गुर एकु ध्यानु॥

अगर गुरुवाणी के आधार पर ही बात करनी हो तो सतिगुरु के पास वह कौन सी शक्ति, सत्ता और ढ़ंग है जिसके द्वारा वह मनुष्य का व्यक्तिगत रूप में काया कलप करता है और नवनीत आत्मिक ज्ञान द्वारा नये समाज की सर्जना करता है। सतिगुरु के पास वह शक्ति और सत्ता प्रभु नाम की ही है जिसके द्वारा वह अविलंब एक अधियात्मिक अमल या आत्मिक रूपांतरण को पूर्ण रूप देता है। यह सचमुच ही एक अलौकिक करामात या अद्वितीय शक्ति है। जिसे गुरुवाणी में अकथ कथा का वर्णन किया गया है। कहा गया है। मानव और मानव समाज तो क्या, सतिगुरु तो धरती की परविर्ती को भी हराभरा और गुलजार बना देता है।

—बलिहारी गुर आपणे देउहाड़ी सदवार॥
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार॥

—सा धरती भई हरिआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ॥

पर सतिगुरु की इस अनुपम और अतिसूक्ष्म शक्ति को वह भाग्यशाली जीव ही जान सकते हैं जो भीतरी दृष्टि द्वारा सतिगुरु की पहचान कर सकते हैं।

नानक से अखड़िया विअनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥

इस प्रकार गुरमति के अनुसार, सतिगुरु इस धरती पर परम ज्ञान, मानव कल्याण और सामाजिक उत्थान का परम श्रेष्ठ केन्द्र बिन्दू और असीमित स्रोत है।

नामधारी अर्थात संत खालसा की स्थापना—

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित गुरु परम्परा में ही नामधारी अर्थात संत खालसा का जन्म हुआ। जब दशम पातशाह श्री गुरु गोविंद सिंह जी 1708 ई० में नादेड़ से लोप हो गये तो उनके संबंध में कई ऐतिहासिक और मौखिक कथाएं प्रचलित हो गयीं। इनमें ही एक आप के गुप्त ढंग से पंजाब में आने के संबंध में है, जहां अठाहरवीं शताब्दी में गुरु खालसा पर कई मुसीबतों के पहाड़ टूटे और उन्हों ने दल खालसा के रूप में संगठित हो कर स्वयं को सुरक्षित रखने के लिये कई सैनिक और असैनिक साधन अपनाये। मुगल शासक श्रेणी और विदेशी आक्रमणकारियों के अत्याचारों को सहन करना और मुकाबला करना पड़ा, वहां पर गुरु साहिबान की प्रचलित की गयी जीवन जाच ने उनके भीतर आत्म बल को जगाये रखा और अनेक बलिदानों के दौर में से गुजरते हुये अपनी आत्मिक और आचरणक शक्ति द्वारा अपने आपको साहस में रखा और सिखी सिदक और गुरु पर आस्था को नहीं खोया। विदेशी हमलावरों की प्रचंड सैन्य शक्ति का डट कर मुकाबला किया। इस घोर अंधकारमय दौर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये नाम वाणी का आश्रय लेकर अहिंसक संधर्ष किया और वीरता के कारनामों को देखकर विरोधी भी अश अश कर उठे। पर इस सब कुछ की पृष्ठभूमि गुरु साहिबान द्वारा प्राप्त हुई वह आत्मिक शक्ति ही काम कर रही थी। परन्तु जब इस कुर्बानियों और संघर्ष के ऐतिहासिक दौर में से निकलकर खालसा के हाथ में राज्य सत्ता आ गयी तो इससे उनके आत्मिक बल को धक्का लगा और उनके आचरण में कई खराबियां आ गयीं और वे एक होकर सांझे शत्रु से लोहा लेने की बजाय आपस में लड़ाइयों का

शिकार हो गये। पंजाब में मिसलों का राज तो कायम हो गया और सिख सरदार शासक भी बन गये मगर सिर पर गुरु वाला साया न रहा। 1799 ई० में सिख मिसलों के राज अधिकार में आये बहुत से क्षेत्रों का सैनिक और राजनीतिक तौर पर पुनर्गठन करते हुये शुकरचक मिसल के सरदार रणजीत सिंह ने पंजाब के विशाल भाग में अपना राज स्थापित करके खालसा सरकार कायम कर ली। महाराजा रणजीत सिंह के निजी जीवन में जहां बहुत से गुण मौजूद थे, वहां सामंत युग के राजा महाराजों के अवगुण भी उनमें आ गये। इस काल के सिख सरदारों और अहिलकारों में, कुछ को छोड़कर, ऐसे अवगुण बढ़ते ही चले गये। प्रसिद्ध इतिहासकार और कवि ज्ञानी ज्ञान सिंह सिखों के इस समय के आचर्णिक पतन और गुरु के मार्ग से विमुख होने, और गुरुवानी का परित्याग करके भोग विलास की पदार्थवादी परविर्ती का इस प्रकार वर्णन करते है—

जाग जिनके बेडेरे बाणी पड़ते सवेरे
गुरु ग्रन्थ बिन हेरे अन्न जल पान न करैं।
तिन ही के नाती धूप दीप की कहा बिखिआती
पाएं हैं न ज्ञाती मूस खात ग्रंथ कि परैं।
जपुजी न रहुरास सुनैं पड़ैं कभी खास
और जे पड़त पास हास तिनहों रहैं।
कहां रब्ब बहरा है गहरा पुकारें जो 'तू'
शहरों में जाये लुकमें रिसाए लेत है।

इतिहास के इस विशेष काल में जब सिख पंथ की ऐसी दुर्दशा हो रही थी, तब हजरों में श्री सतिगुरु बालक सिंह जी को गुरु गोबिंद सिंह जी ने दर्शन देकर गुरुता का कार्य भार सौंप दिया। सतिगुरु बालक सिंह के प्रयत्नों से उत्तर-पश्चिमी इलाके में फिर से सिखी का प्रचार हुआ और आपकी कीर्ति और यश दूर दूर तक फैल गया।

फरवरी 1816 में सिखी बाग वर राजसी तेज प्रताप के होते हुये श्री सतिगुरु रामसिंह जी के आगमन और उनके सपुर्द किये गये कार्यों के संबंध में बता दिया था। आप अपने जीवन काल में प्रारम्भ से ही नाम बाणी में ध्यान मग्न रहते थे और काम काज में भी पूरे थे। जवानी में आप महाराजा रणजीत सिंह की सेना में कंवर नौर निहाल सिंह की पलटन में भरती हो गये। आप जी के आत्मिक स्वभाव, नाम और भक्ति के कारणों से इस पलटन का नाम ही भक्तों की पलटन पड़ गया। ऐसे समय और विशेष कर महाराजा रणजीत सिंह के 1839 को आंखें मीटने के बाद खालसा

राज विदेशी और आंतरिक षड़यन्त्रों का शिकार हो गया। इस सारे खूनी दुखांत को श्री सतिगुरु रामसिंह जी ने निकट से देखा और परखा था। फलस्वरूप जब आप अपनी नौकरी के संबंध में पेशावर की ओर सेना के साथ कूच कर रहे थे, तो 1843 को हजरों में सतिगुरु बालक सिंह जी के दर्शन कर, उनके मुख से दशम पातशाह के संदेश को सुन और गुरुमंत्र लेकर, अपने जिम्मे लगाये गये ऐतिहासिक कर्तव्य की पूर्ति के लिये चिंतन और योजना बनानी आरम्भ कर दी।

1846 तक आप यद्यिप खालसा सेना में ही रहे, मगर अंग्रेज और सिखों की प्रथम लड़ाई समय आपने सिख सरदारों और जरनैलों लाल सिंह और तेज सिंह जैसे कौमी गदारों के षड़यन्त्रों को भांप लिया था। इसलिये सरकारी नौकरी का परित्याग करके इसकी कौमी पराजय को भांप कर सैजिक जीवन को तिलांजली दे दी। और जन्म भूमि में आकर नाम वाणी और भक्ति के साथ साथ जहां काम काज आरम्भ किया, वहां भविष्य के संबंध में भी चिंतन करते रहे।

आखिर 1857 ई० 12 अप्रैल वैसाखी के शुभ दिन आप ने अपने एक सिख भाई राय सिंह से गुरु मर्यादा की रीति को हजूर साहब (नादेड़) से मंगवा कर अमृत तैयार किया और नामधारी संत खालसा के रूप में गुरु सिखी की पुनः सर्जना की। कान में गुरुमंत्र देने की सनातन मर्यादा पुनः स्थापित की। प्रभु के नाम से सिख और आत्मिक जीवन का आधार बना कर गुरु और नाम बाणी के साथ पुनः जोड़ दिया। यह वह समय था जब केवल एक माह पश्चात् मई 1857 में भारत की आजादी का प्रथम संग्राम आरम्भ हुआ। इस संग्राम में भले ही कई सिख सरदार भी शामिल हुये, मगर इस समय तक श्री सतिगुरु रामसिंह जी का मुख्य उद्देश्य कौमी जीवन में गुरमति के आदर्श को परिपक्क करना था। आप इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि बगैर आत्मिक बल और आचरणिक शक्ति के किसी भी कौम और समाज का कायाकलप नहीं हो सकता, इसलिये नैतिक बल का होना आवश्यक है जो गुरमति के अनुसार गुरु द्वारा नाम वाणी से ही प्राप्त हो सकता है। कुछ वर्षों से स्थापित गुरु मर्यादा से आपका यश चारों दिशाओं में फैल गया। और यह बात सारे देश में आम हो गयी कि भैणी में सतिगुरु का प्रकाश हुआ है। यह उसी तरह की स्थिति थी, जैसे किसी समय गुरु तेग बहादुर जी बाबा बकाला में प्रकट हुये थे। उस समय भी कौम को बलिदानों से बचाया जा सकता था और इस समय भी आत्मिक ज्योति जगाकर बलिदान होने का समय निकट आ पहुंचा था। इस प्रकार अपने

समय के ऐतिहासिक दायित्व की पूर्ति के लिये अपने आप को गुरु पद ग्रहण करने से पूर्व नाम वाणी और भक्ति के दौर में से गुजरना पड़ा और गुरु पद की ऊँची जिम्मेदारी के लिये स्वयं को तैयार करना पड़ा। सतिगुरु रामसिंह जी के आत्मिक बल और आचरणिक साधनों के फलस्वरूप ही कौम में नवजागृति पैदा हुई। आप ने सिख जगत में बलिदानों, समाज सुधार और स्वतत्रता की पुनः प्राप्ति के लिये नई रूह फूंक दी।

अपने जन्म काल से लेकर वर्तमान समय तक नामधारी समाज और संत खालसा भारत के लोक जीवन में जो परिवर्तन लाया और जिस आत्मिक और आचरणिक शक्ति का निर्माण किया उसके अनेक पक्ष .... भारत के समाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय इतिहास में उच्च आदर्श और कीर्ति के रूप में अपने गौरव को बढ़ा रहे हैं।

कूका आंदोलन का उत्थान और बलिदानों का अविस्मर्णीय दौर—

1857 में श्री सतिगुरु राम सिंह जी के चलाये अहिंसक संग्राम को दबाने के बाद अंग्रेज सरकार ने दमन नीति का दौर चला दिया था और इसके साथ ही साम्राज्यवादी आर्थिक लूट खसूट की नीति पर अमल करना शुरु कर दिया था। दूसरी ओर भारत के अंग्रेज शासक यह प्रभाव देना चाहते थे कि पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति पूर्वी लोगों के जीवन से अधिक श्रेष्ठ और प्रभावशील है। इसी नीति के अधीन उन्होंने जहां राज प्रबंध को संगठित करके कुछ सुधार किये, वहां साथ ही सांस्कृतिक आक्रमक नीति का प्रसार किया। पश्चिमी ढंग की शिक्षा प्रणाली और ईसाई मिशनरियों के प्रचार द्वारा यह सांस्कृतिक आक्रमण दूर तक प्रभाव डालने वाले थे। श्री सतिगुरु राम सिंह जी साम्राज्यवादी सरकार की इस राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक नीति को लेकर पूरी तरह से सजग थे। महाराजा रणजीत सिंह की खालसा सरकार के समय पंजाब एक अलग स्वतंत्र राज था। मगर पंजाब के ब्रिटिश शासन के अधीन होने के साथ 1849 में राष्ट्रीय परिस्थितियों में बदलाव आना स्वभाविक था। 1857 के पश्चात् भारत, ईस्ट इण्डिया कंपनी के स्थान पर सीधा ही मलिका विक्टोरिया अर्थात बर्तानवी राज अधीन हो गया और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन शुरु हुआ। अब एक ऐसी रणनीति की जरुरत थी, जिस में पंजाब के राष्ट्रीय अस्तित्व को सम्भूचे भारत के राष्ट्र व्यापी-परिवेश में देखने की जरुरत थी। सिख धर्म तो राष्ट्र व्यापी था। जिसके प्रमाण सिख गुरु साहिबान के जीवन समाचारों में भलीभांति मिल जाते हैं कि कैसे उनका दृष्टिकोण सामाजिक और धार्मिक तौर पर राष्ट्र व्यापी था और गुरु साहिबान का जीवन दृष्टिवान

मानवीय पक्ष से पूर्णतः विश्व व्यापी था। कम से कम किसी भी दौर में सिख गुरु साहिबान ने साम्प्रदायिक या विचारधारक संकीर्णता का सबूत नहीं दिया, वरन् इसके विपरीत राष्ट्र व्यापी और विश्व जीवन दर्शन का निर्माण किया है।

नामधारी संत खालसा के रूप में सतिगुरु रामसिंह जी ने उसी गउ् गरीब की रक्षा को अपनाया जिसका समर्थन सिख गुरु साहिबान प्रारम्भ से ही करते आये थे और जिसका उल्लेख की गुरु गोविंद सिंह जी ने अपनी प्रसिद्ध रचना उग्रदन्ती में किया है:

गऊ घात का दोख जग सिओ मिटाऊ।

पंजाब में सिख राज के पतन के बाद लोगों में निराशा का आ जाना स्वभाविक था। महाराजा रणजीत सिंह के काल में पंजाब में गऊ हत्या पर प्रतिबंध था। और धार्मिक सहणशीलता सर्वोपरि थी। मगर अंग्रेजी राज के समय स्वतंत्रता संग्राम के बाद धार्मिक तौर पर भी विदेशी शासक अपनी मनमानी कर रहे थे। पंजाब के अंतिम महाराजा दिलीप सिंह का ईसाई बनना और सिखों के केन्द्रीय धाम श्री अमृतसर में बूचड़खानों का खुल जाना समूची कौम के स्वाभिमान को बहुत बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती को भी सतिगुरु राम सिंह जी और उनके अनुयाईयों ने खुशी से स्वीकार किया था। सामाजिक और धार्मिक तौर पर स्वयं को सतिगुरु राम सिंह जी के नेतृत्व में संगठित कर लिया था। 1857 से 1872 तक के पन्द्रह वर्ष नामधारी इतिहास में विशेष महत्व रखते हैं। और इनका समूचे राष्ट्रीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्व है।

राष्ट्रीय जीवन में परिवर्तन लाने के लिये श्री सतिगुरु राम सिंह जी नाम वाणी के आधार को प्रमुख साधन मानते थे। आप ने अल्पकाल में ही नाम वाणी का परवाह चला दिया जिससे उनके सिखों में आत्मिक बल का बेहद संचार हुआ। यहां तक कि सिख संगत अपने गुरु दर्शनों के लिये दूर दूर से आने लगी और गुरु प्रेम गुरु श्रद्धा तथा गुरु भक्ति में लीन होकर अपना सब कुछ चरणों में नौछावर करने को तैयार हो गयी। गुरु भक्ति में लीन हो सिख दीवाने और मस्ताने होकर ऊँचे कूक कूक कर गुरु शब्द का उचारण करने लगे। इसी कारण ही सतिगुरु राम सिंह जी के अनुयाईयों का नाम ही कूके पड़ गया। यही कारण है कि राष्ट्रीय इतिहास में नामधारी संत खालसा के योगदान को कूका आंदोलन के रूप में स्मरण किया जाता है। यह कूका आंदोलन वास्तव में भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम बड़ा आंदोलन था जिसने कई पहलूओं से भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता

संग्राम के लिये बहुत बड़ी मिसालें कायम कीं जिनकी निरख परख से यह बात सहज में ही स्पष्ट हो जाती है कि भारत के राष्ट्रीय इतिहास की धारा को बदलने और नवीन युग के अनुकूल ढालने में मदद की।

नामधारी दस्तावेजों में यह बात लिखी हुई है कि कूका कभी झूठ नहीं बोलता, कूका कभी शराब नहीं पीता और कूका कभी अंग्रेज सरकार का वफादार नहीं हो सकता।

उन्नीसवीं सदी के दूसरे अर्ध में कूका आंदोलन के अनेक पक्ष दृष्टिगोचर हुये। श्री सतिगुरु राम सिंह जी ने हुकम नामे जारी करके सिख संगत को नाम वाणी के साथ जोड़कर धार्मिक रीतियों में परिपक्क कर दिया और आप जी के धार्मिक दीवान और गुरमति के अनेक प्रचार दौरे सिख धर्म की उच्ची शान को पुनः स्थापित करने लगे। अमृतसर दीपावली के दीवान और श्री आनन्दपुर साहब होला पर्व की शान अपनी शिखर को छू रही थी। लाखों की संख्या में श्रृद्धालु जन आपकी संरक्षता में आ चुके थे। सामाजिक तौर पर भी आप ने लोगों को शराब तम्बाकू और मांस आदि के प्रयोग से रोकने और सादा जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। गुरमति के अनुसार धार्मिक दीवानों में सादे विवाह की रीत चला कर नये सुधार किये। स्त्री जाति को नये अधिकार दिये। बेटियों को मारने और पैसे लेकर विवाह करने पर रोक लगायी। और यहां-तक कि स्त्री को सूबा की पदवी भी प्रदान की। माता हुक्मी का इस संबंध में विशेष कर जिक्र किया जा सकता है। माता इन्द्र कौर और खेम कौर जैसी वीरांगनों का 1872 के शहीदी जत्था में शामिल होना साबित करता है कि स्त्री जाति के उत्थान में श्री सतिगुरु राम सिंह जी का कितना योगदान था।

सतिगुरु रामसिंह जी के तेज प्रताप और कूका आंदोलन के बढ़ते प्रभाव को देखकर अंग्रेज सरकार चिन्ता ग्रस्त हुई जा रही थी। जिस प्रकार श्री सतिगुरु जी ने अपने समूचे प्रबंधकी ढांचे का संगठन किया । 'सूबे' स्थापित किये और डाक आदि की व्यवस्था को अपने अलग से तंत्र में' संगठित किया, वह सचमुच आप की अनुपम सूझबूझ का प्रमाण था। केवल इतना ही नहीं— आपने सभी वाद विवाद पंचायत रूप में निपटाने, अंग्रेजी सरकार के डाक, रेल, अदालतों और विदेशी माल के वहिष्कार से लेकर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का उपदेश दिया। परिणाम स्वरूप सामाजिक तौर पर कूका आंदोलन अंग्रेज सरकार के विरुद्ध पूर्ण संग्राम का रूप धारण कर गया।

इसी कौमी नीति को बाद में जाकर राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने अपनाने का प्रयास किया। धार्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक तौर पर स्वदेशी

नीति को अपनाने के साथ साथ श्री सतिगुरु जी ने राजनीतिक पक्षों की ओर भी ध्यान दिया।

रियासत जम्मू कश्मीर में कूका रजमैंट बनवाई और नेपाल जैसे स्वतंत्र राज के साथ संबंध जोड़ने का प्रयास किया। इन सभी बातों से सतिगुरु राम सिंह जी की दूरदर्शिता और समूचे जीवन प्रति चहुमुखी और व्यापक दृष्टिकोण का पता चलता है। ऐसे ही प्रयासों से आप ने एक ऐसी कर्म भूमि तैयार कर ली थी जिसमें राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिये बलिदान होने वाले आजादी की शमा पर मर मिटने वाले परवानों का पैदा होना सम्भव हो गया। जब 1870-71 में लोगों द्वारा किये गये प्रयासों के बावजूद बुचडखाने बंद नहीं किये गये तो जून 1871 में अमृतसर, जुलाई 1871 में रायकोट और बाद में जाकर जनवरी 1872 में मलेरकोटला के ऐतिहासिक वाकियात घटित हुये। जिसमें कूके सिखों ने बूचड़ों पर हमला करके गो-रक्षा के उद्देश्य हेतु बलिदान किये। गोरों ने जिस बेशर्मी जलद बाजी और बगैर किसी सबूत के मुकदमों का ढोंग रचाकर दण्ड सुनाये और सिखों को फांसी और कैद की सजायें हुई, उससे मलिका विक्टोरिया की न्याय प्रियता का भण्डा सहज में ही फूट जाता है। दूसरी ओर जिस आस्था के साथ सतिगुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुये जिस प्रकार वीर योद्धाओं ने स्वयं को अदालत में जाकर पेश किया और निर्दोष पकड़े गये व्यक्तियों को आजाद करवाया और हंस हंस कर फांसी के रस्से को चूमा, वह विश्व इतिहास में एक अविस्मरणीय कारनामा है। मलेरकोटले का शहीदी साका 17-18 जनवरी 1872 तो इस गऊ रक्षा आंदोलन का शिखर था जिसमें 66 सिखों को तोपों से उड़ाया गया और बगैर कोई मुकदमा चलाये उन्हें शहीद कर दिया गया।

श्री सतिगुरु राम सिंह जी पर इससे पूर्व भी कई बार प्रतिबन्ध लगाये गये थे लेकिन इन शहीदी घटनाओं के पश्चात आप जी को 18 जनवरी को बाईस सूबों के साथ गिरफ्तार करके बंदी बना कर देश निकाला दे दिया गया। कईयों को और सजाएं दी गयीं। नामधारियों के केन्द्रीय धाम श्री भैणी साहब की तलाशी ली गयी और वहां पर पुलिस की स्थायी चौकी बैठा दी गयी। जो लगभग पचास वर्ष 1923 तक रही।

जब सतिगुरु राम सिंह जी श्री भैणी साहब से अंतिम बार पुलिस के पहरे में जा रहे थे तो सिखों के पूछने पर कि उनका वारिस कौन होगा, श्री सतिगुरु जी ने बचन किया कि मेरी ग़ैर मौजूदगी में सिखी के इस बाग को भाई बुध सिंह (जो मेरा एक स्वरूप है) हरी भरी रखेगा। तभी से श्री सतिगुरु जी के छोटे भाई बुध सिंह (जन्म 1819) को नामधारी

साध संगत में श्री सतिगुरु राम सिंह जी का स्वरूप माना जाता है। श्री सतिगुरु राम सिंह जी को पहले इलाहाबाद फिर रंगून और बाद में मर्गोई में नज़रबंद रखा गया जहां से आप 1885 में पहरे में से निकल कर अज्ञातवास चले गये।

श्री सतिगुरु हरि सिंह जी और सतिगुरु प्रताप सिंह जी का बहुमूल्य योगादान—

—श्री सतिगुरु राम सिंह जी ने गुरु नानक देव की चलाई मर्यादा का जिस प्रकार युगानुसार विस्तार किया और धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों के साथ साथ आजादी की ज्योति जगाई, उसी परम्परा को लेकर श्री सतिगुरु हरि सिंह जी 1872 से 1906 तथा श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी 1906 से 1959 तक नामधारी समाज का निर्माण, विकास और प्रसार करते रहे हैं और अनेक पक्षों से उन्होंने सिख समाज को कई नई उपलब्धियां प्रदान की हैं। वर्तमान समय में श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी इस धर्म कर्म और सामाजिक प्राकर्म के कार्यों को स्थापित गुरु मर्यादा के अनुसार निबाह रहे हैं। धार्मिक तौर पर नाम वाणी और कथा-कीर्तन सिखी धार्मिक जीवन के मुख्य पहचान चिन्ह हैं। इन सब के विकास और विस्तार में नामधारी सतिगुरु साहिबान ने गुरुत्व के उच्चे कार्य से निबाहा है। अपने पवित्र पावन व्यक्तित्व की पारस छू द्वारा लाखों मनुष्यों को नाम की बहुमूल्य देन बख्शकर उनकी काया कलप की और उन्हें सामाजिक जीवन के धार्मिक और रचनात्मक कार्यों से जोड़ा है। इसी प्रचार, गुरुवाणी के प्रचार और विशेषकर गुरु कीर्तन की मर्यादा और रीति को न केवल सुरक्षित ही रखा है बल्कि इस क्षेत्र के विकास में बहुमूल्य योगदान पाया है। गुरु घर के कीर्तनियों को शुद्ध रागों की पहचान करवाकर उनकी गायकी के अनेक कोमल भागों और मधुर स्वरों को भरपूर किया है। सबसे बड़ी देन तारदार साजों का निरंतर प्रयोग है। जिनसे संगीत लहरे और गुरुवाणी के शब्दों की रागानुसार ध्वनियां गूंजती सुनाई देती हैं। ध्रूपद और धमार रीति की संगीतबद्ध शैलियों, पुरातन रीतों को केवल नामधारी साध संगत के दीवानों में ही सुना जा सकता हैं।

गुरुवाणी के शुद्ध पाठ की ओर भी विशेष ध्यान दिया है और शुद्ध पाठ के लिये नये विद्यार्थियों को तैयार करने के लिये नामधारी पाठी इस ओर विशेष हिस्सा ले रहे हैं।

हवन यज्ञ की सनातनी रीति गुरमति परम्परा का भाग मानकर कई बार 'श्री भगऊती की वार' के सवा लाख पाठों के पूर्ण मर्यादा के अनुसार भोग पाये गये हैं। इसी प्रकार कई विशेष स्थानों पर नाम सिमरन की वर्नियां

चलाई जा रही हैं जिनमें पूर्ण सोध के साथ निरंतर सिमरन का प्रवाह चल रहा है। श्री भैणी साहब के स्थान पर गत पचास वर्ष से अधिक समय से इस मर्यादा को चलाया जा रहा है।

इन के साथ ही गुरु घर के निवाजे हुये कई जत्थेदार 'हल्ले के दीवान' की लोक परम्परा के अनुसार गुरु इतिहास और गुरु यश की जीवन साखियों द्वारा, प्रसिद्ध कवीशर गुरु कथा के मनोहर कीर्तन द्वारा बखान कर रहे है। नामधारी गुरु साहिबान ने अनेक रागी और वादकों को निवाजा है और उन्हें संगीत की परम्परा में परपक्क किया है।

नामधारी सतिगुरु साहिबान ने सामाजिक जीवन के लगभग हरेक रचनात्मक पक्ष में रूचि दिखाई है और कई व्यक्तियों का अपनी स्वयं की निगरानी में विशेष क्षेत्रों में पदार्पण किया है। बागबानी, कृषि, डेरी उत्पादन, पशु पालन के क्षेत्र में शिखर की उपलब्धियों की है। इस प्रकार औद्योगिक और रचनात्मक व्यवसायों के साथ साथ अपने निजी जीवन में भी पवित्रता, शुद्धता, सादगी के आदर्श को स्थिर रखा है।

नामधारी 'साध संगत' अपने विशेष पहरावे से दूर से ही पहचानी जाती है। और उनका उज्जवल दीदार, मीठा व्यवहार, उनके उच्चे किरदार का साक्षी है। यह सभी बख्शशें नामधारी सिख को अपने गुरु के दर्शन और गुरु की ओर से प्रेम, प्रेरणा और उत्साह के कारण प्राप्त हुये हैं। अपने गुरु के पावन दर्शन करके नामधारी सिख गद्‌गद् हो उठता है। कई मस्ताने तो मस्ती में आकर नाच उठते हैं और अपने सतिगुरु के बलिहारी जाते हैं।

नामधारी सतिगुरु साहिबान ने आजादी की उस ज्योति को सदा जगाये रखा है, जिसके फलस्वरूप नामधारी साध संगत ने बहुमूल्य योगदान पाया था। श्री सतिगुरु हरि सिंह जी ने अपने जीवन काल में अंग्रेज सरकार के जुल्म को सहन कर अपने धैर्य को डोलने नहीं दिया और अपने सिखों में भी भारत की स्वतंत्रता के संग्राम को जारी रखा। आवश्यकता अनुसार राष्ट्रीय संकटों और देश में पड़े अकाल के समय उस गुरु के लंगर द्वारा सेवा की जिसे सतिगुरु राम सिंह जी ने अपने कर कमलों द्वारा स्थापित किया था। श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी कहते थे कि मैं तो सतिगुरु राम सिंह जी की लौह का सेवक हूं। सतिगुरु हरि सिंह जी के वरदान द्वारा जो अनाज लंगर में डाला जाता है, वह उस सदा बरत लंगर में हमेशा रहता है, और हजारों यात्रियों की भूख को मिटाता है। 1899 के अकाल समय सतिगुरु हरि सिंह जी के संरक्षण और 1947 के देश विभाजन के

समय सतिगुरु प्रताप सिंह जी की देखरेख में उस गुरु के लंगर ने हजारों जरूरत मंदों की सहायता की है।

देश के स्वतंत्रता संग्राम का नामधारी समाज अगुआ है ही। सतिगुरु राम सिंह जी के निर्वासन और सतिगुरु हरि सिंह जी के गुरु काल में अनेक नामधारियों को इसलिये खण्डित होना पड़ा कि उन्होंने सरकारी आदेश के विरूद्ध अपने घरों में श्री आदि ग्रन्थ साहिब के पाठों के भोग पाये थे। कईयों को जुर्माने हुये और कई सूबे साहिबान जेलों में ही अपना शरीर छोड़ गये। बीसवीं सदी के हर स्वतंत्रता संग्राम में कई देशभक्तों और स्वतंत्रता सेनानियों को गुरू घर से प्ररेणा और उत्साह प्राप्त हुआ।

1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के समय सतिगुरु प्रताप सिंह जी की माता जीवन कौर ने लंगर की अटूट सेवा करके और नामधारी सिखों ने घोड़े लाकर जूलूस की शान को बढ़ाया। 1938 में अखिल भारतीय प्रजा मण्डल के लुधियाना में हुये अधिवेशन के समय पंडित जवाहर लाल नेहरू श्री भैणी साहिब की यात्रा और बाद में कांग्रेसाध्यक्ष डा0 राजेन्द्र प्रसाद तथा अन्य वरिष्ठ नेताओं की यात्राएं विशेष कर वर्णन योग है। 1943 में हिन्दू सिख मिलाप कान्फ्रेंस और 1934 में गुरु नानक सर्व सम्प्रदाय कान्फ्रेंस और गुरमति संगीत सम्मेलन जैसे अद्वितीय आयोजनों को आज भी लोग याद करते हैं।

1947 के देश विभाजन के समय जिस प्रकार सतिगुरु प्रताप सिंह जी ने पश्चिमी पंजाब में रह गये सेवकों के संबंध में चिन्ता प्रकट की और उन्हें श्री भैनी साहिब आने का निमंत्रण दिया । उनकी सेवा सम्भाल की और जीवन नगर में विशाल भूमि खरीद कर अपने सेवकों का पुनर्वास किया, यह सब सुनहरी अक्षरों में लिखने के योग्य है। इससे पूर्व नाभा नरेश की माता की ओर से बीड़ मठाड़ू की सैंकड़े एकड़ भूमि को अपने सेवकों में बांटा । यह सभी बातें श्री सतिगुरु जी के विशाल हृदय और उदारता को दर्शाती हैं।

श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी को पशु धन से भी अथाह प्रेम था। उन्होंने गऊओं, भैसें और घोड़ों की सेवा सम्भाल और नसल सुधार की ओर गहरी रूचि दिखाई थी। इस के लिये कई पुरस्कार भी प्राप्त किये। विश्व शांति और गो रक्षा सम्मेलनों में सक्रिय रहे। जिस स्वतंत्रता के सुनहरी युग की आप ने कल्पना की थी, और आजादी के वह सपने साकार नहीं हुये, तो श्री सतिगुरु जी को भ्रष्टाचार में ग्रस्त राजनीतिक नेताओं से कुछ निराशा भी हुई। फिर भी आप हमेशा उत्साह में रहे। आप ने शांत और अडिग

रहकर लाखों की संख्या में अपने सेवकों को अद्वितीय आत्मबल और उच्च नैतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उत्साहित किया। इस दौरान 'कूका' और 'सतियुग' आदि सप्ताहिक और दैनिक अखबार जारी करके आप जी ने मातृभाषा तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिये बहुत से लेखकों और लेखक संस्थाओं को प्रोत्साहित किया। आपके अपार उच्च गुणों तथा उच्च कोटि के मानसिक व अध्यात्मिक गुणों के कारण आप जी को हमेशा स्मरण किया जाता है।

वर्तमान श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी ने जब गुरूता के कार्य को सम्भाला तो उस समय प्रमुख नामधारी केन्द्रीय धाम श्री भैणी साहब और श्री जीवन नगर प्राचीन काल तपो तथा भूमियां समान ही दिखाई देते थे, जिसमें कई उच्च कोटि के महापुरूष और साधु संत गुरु आश्य के अनुसार सीधा सादा जीवन व्यतीत करते थे। सतिगुरु जी के सम्मुख कई कठिन समस्याएं थीं। समय की सरकार भी कुछ विशेष कारणों से उलझनें पैदा कर रही थी, लेकिन श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी अपनी दूरदर्शिता, उदारता सहनशक्ति के कारण उन सब पर नियंत्रण करने में सफल हुये और नामधारी पंथ को विश्व व्यापी स्वरुप प्रदान कर दिया। आज विश्व के बहुत से भागों में नामधारी साध संगत के कई विशेष केन्द्र कर्मशील हैं। जब भी कभी श्री सतिगुरु जी की ओर से बड़ा समागम होता है तो नामधारी साध संगत हजारों की संख्या में पहुँचती है।

श्री सतिगुरु जगजीत सिहं जी यहां अध्यात्मिक जीवन में परिपूर्ण और सुदृढ़ हैं और अपने नित्य कर्म में कोई बाधा नहीं आने देते, वहां आप विशेष सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी पूरी दिलचस्पी रखते हैं। पशुपालन, बागबानी, खेलों, नई अबादकारी, नवनिर्माण शिक्षा संबंधी और सांस्कृतिक कार्यों, साहित्य सम्मेलनों, संगठित उत्सव तथा अन्य कई प्रकार के सामाजिक और धार्मिक संगठनों में आपके योगदान को हमेशा सराहा जाता है।

आप ने गुरु धामों, विशेष कर श्री भैणी साहिब के नवनिर्माण की ओर खास कर ध्यान दिया है। आज श्री भैणी साहब बिलकुल अलग ही संसार के सम्मुख दृष्टिगोचर हो रहा है। पहले समय में यहां समराला लुधियाना सड़क से भैणी साहिब जाने के लिय कच्चा झाड़ी–रास्ता होता था, वहां आज बहुत सुंदर विशाल सड़क जाती है। इसके चारों ओर सुन्दर वृक्ष हैं। सतिगुरु जी की विलक्षण सूझ बूझ के कारण यह स्थान एक विकसित, आदर्शक, प्रदूषण रहित ग्राम का रूप धारण कर गया है। पहले के छोटे से फार्म के स्थान पर आज सैकड़े एकड़ों का उपजाऊ फार्म मौजूद है जिसमें

कृषि और बागवानी के नित नये प्रयोग किये जा रहे हैं क्योंकि खेती बाड़ी, बागवानी, पशु पालन के संबंध में सतिगुरु जी का अपना ही मौलिक दृष्टिकोण है जिसे आप धीरे धीरे क्रियान्वित करते जा रहे हैं।

श्री सतिगुरु राम सिंह जी द्वारा स्थापित लंगर, पुराने अस्तबल की नुहार ही बदली जा चुकी है। और यात्रियों की सुविधा के लिये अनेक नये भवन समूहों का निर्माण किया जा चुका है। श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी की सब से बड़ी देन श्री सतिगुरु राम सिंह जी के जन्म स्थान को प्राप्त करके इस परम पावन स्थान को साध संगत के दर्शनों के लिये खोल देने का कारनामा है। श्री सतिगुरु राम सिंह जी का पुरातन दीवान स्थान और अकाल बुंगा, श्री सतिगुरु हरि सिंह जी की स्मृति में बनाया गया हरि मंदिर, श्री रामसर का नव निर्मित सरोवर, श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी की याद में स्मृति मंदिर और यज्ञशाला, अष्टभुजा गोल मंदिर तथा सतिगुरु प्रताप सिंह अकादमी की बिल्डिंग आदि सभी दर्शनीय स्थान अपनी अपनी जगह इस पवित्र गुरु धाम की शोभा को चार चांद लगा रहे हैं। यात्री श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी महाराज की इस अद्वितीय देन की प्रशंसा करते हैं।

बाहर से दूर दूर से आने वाली देश विदेश की संगत की सुख सुविधा और ठहरने के लिये नये भवनों का निर्माण कर दिया गया है। यहां तक कि जिस मृत्युशाला का निर्माण किया गया है, वह भी नई रूचियों के अनुसार बनाया गया रमणीय स्थान है।

पर इस नव निर्मित श्री भैणी साहिब की शोभा में उस समय अपार वृद्धि होती है, जब इस पवित्र धाम पर नामधारी साध संगत के विशेष अवसरों पर विशाल समागम होते हैं। भले ही यह आश्वन का जप प्रयोग हो या होले का विशेष समागम या फिर विश्व नामधारी विद्यकजत्थे का वार्षिक उत्सव या कोई पशु प्रदर्शनी आदि। यह सब सतिगुरु जी अपने व्यक्तित्व अर्थात हजूरी दर्शन के साथ साथ साध संगत की सतिगुरु जी पर अपार श्रृद्धा और सेवा भक्ति के शानदार उदाहरण पेश करते हैं।

यही ही सतिगुरु जगजीत सिंह जी की पावन शकसियत का प्रभावशाली मिकनातीसी आकर्षण है जो अपने साथ विशाल जन समूह को जोड़ने की सामर्था रखता है। और जो कोई भी—सतिगुरु जी के चरण कंवलों में समर्पण की भावना लेकर आता है, सतिगुरु जी उसकी झोली भरपूर पदार्थों से भर देते हैं। सतिगुरु जी नाम के बेअन्त भण्डार के स्वामी है। और वह इस ईश्वरी देन को बड़ी उदारता से बांट देते हैं। पर जिनके भाग्य

अच्छे हों, वही इस देन का सदोपयोग करके अपने गुरु समान सहनशीलता, उपकार, मानव सेवा और उदारशील जीवन के पात्र बन सकते हैं।

श्री सतिगुरु जी जहां भी जाते हैं, वहां की धरती के भाग्य जाग जाते हैं। धरती का वह भू-खंड हरियावल और समृद्धता में खिल उठता है, क्यों जो आप जी की पावन पवित्र हस्ती हमेशा प्रभु के रंग में रंगी रहती है। अपने इर्द गिर्द एक ऐसी आत्मिक प्रभाव मंडल की रचना कर देती है जो सतिगुरु जी के निजी और संगत स्वरूप में सम्पर्क में आने वाले हरेक व्यक्ति और जन समूह में नई खुशी, उत्साह, सेवा और उपकार के सद्‌गुणों का प्रार्दुभाव करता है। गुरमति में नाम सिमरन, श्रम करने और बांटकर खाने के तीन मुख्य आदर्श आदि काल से ही प्रधान रहे हैं। गुरु साहिबान की कृपा द्वारा ही मानव समाज में ऐसे अनेक सद्रपुरूष, संत, ब्रह्मज्ञानी, वीर योद्धा और शहीद मुरीद पैदा होते रहे, जिन्हों ने अपने व्यक्तिगत जीवन के उच्च किरदार द्वारा समाजिक इतिहास की धारा को ही बदल कर रख दिया। सतिगुरु ही अपने निजी उपकार द्वारा ऐसे आदर्श पुरुषों की सर्जना कर सकता है। अपनी नदरि कर्म और उपकारी कृपा द्वारा श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी ने हरेक क्षेत्र में ऐसे कर्मशील व्यक्तियों की सर्जना कर दिखाई है। आपकी साध संगत राष्ट्रीय निर्माण के कार्यों में रचनात्मक भूमिका निबाहती चली आ रही है। यही कारण है कि आप जहां भी जाते हैं, आपकी जय जय कार होती है और हर कोई आपको अपना हमदर्द और प्रेरणा का स्रोत समझता है।

यह बात और भी हर्ष की है कि बनारस के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय में श्री सतिगुरु राम सिंह जी के नाम पर चेयर स्थापित की गयी है। इसके द्वारा जो विशेष कार्य किया जाएगा उससे सिख सतिगुरु साहिबान और उनके अनुयाइयों द्वारा किये गये बलिदान, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण में पाये गये बहुमूल्य योगदान का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः मूलांकन किया जायेगा। इससे नामधारी इतिहास के वह पक्ष भी सामने आयेंगे जो अब तक राष्ट्रीय इतिहास में आपेक्षित ही रहे हैं। आशा बंध रही है कि नामधारी इतिहास के संबंध में नई खोज इस दृष्टि से कई नये पक्षों को उजागर करेगी और नामधारी पंथ को उसके आधुनिक संदर्भो में समझने में सहायक होगी।

लेखक
प्रोः कृपाल सिंह कसेल

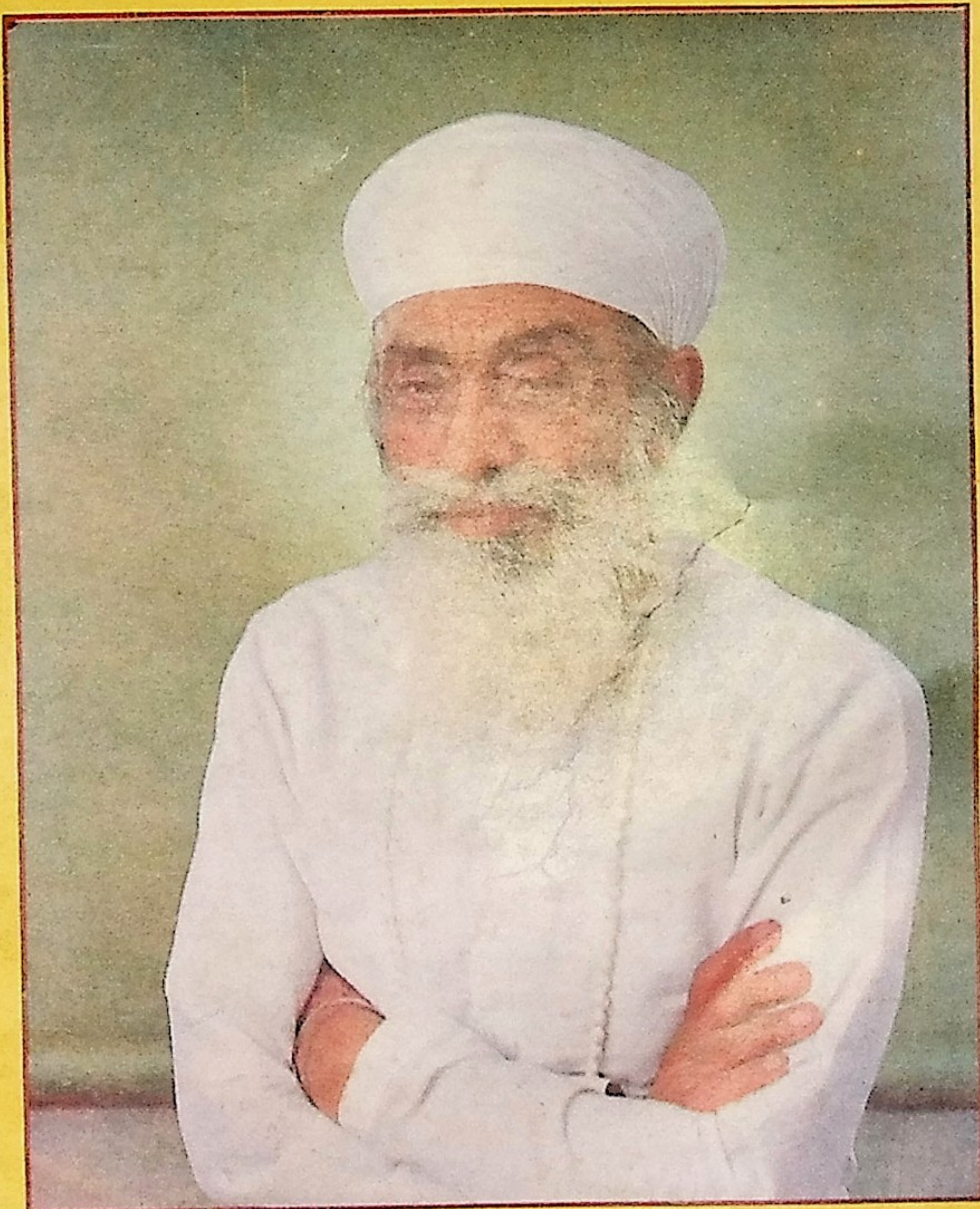
हिन्दी रुपान्तर
प्रीतम सिंह पंछी



श्री सतिगुरु जी चीनी घोड़ी पर सवार शहीद सिक्खों और सूबा साहिब सिंह एवं सूबा लखा सिंह के साथ।



श्री सतिगुरु जी का समुद्री जहाज द्वारा कलकत्ता से देश निर्वासन किये जाने का दृश्य।



सिक्ख परम्परा के वर्तमान गुरु
श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी महाराज।

सतिगुरु राम सिंह जी के दर्शन–हेतु नाम जपा जाए, श्री आदि ग्रन्थ साहिब जी के पाठ सम्पन्न किए जायें ताकि सतिगुरु जी के शीघ्र दर्शन प्राप्त हों तथा समस्त संसार का दुखः दारिद्रय दूर हो—सभी सुख को प्राप्त हों।

—सतिगुरु जगजीत सिंह जी